P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XI*July-2016

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री समस्या के विविध आयाम

नीलम सराफ
वरिष्ठ प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री समस्या के विविध आयामों पर चिंतन हुआ है। कृष्णा सोबती ने नारी जीवन से जुड़ी हर एक समस्या का अपने कथा साहित्य में अनेक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। स्त्री के दमन, उत्पीड़न एवं संघर्ष और मुक्ति की आकांक्षा को लेखिका ने अपने साहित्य में यथार्थ रूप से अभिव्यक्त किया है। सदियों से दासत्व की मानसिकता, पारंपरिक दुराग्रह और कर्तव्यो के बोझ तले दबी नारी उपेक्षित, तिरस्कृत और शोषित रही। स्त्री के लिए शिक्षा, वैचारिक स्वतन्त्रता एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता अनिवार्य है तभी तो वह अपने अस्तित्व के प्रति जाग्रत हो सकेगी।

मुख्य शब्द : चेतना, समानता, स्वतन्त्रता, दुराग्रह, अभिशप्त, यथार्थ,उत्पीड़न

प्रस्तावना

कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य जगत की प्रख्यात कथाकार है। लेखन का आरम्भ उन्होंने कविता से किया था। तदोपरान्त उन्होंने अपनी लेखनी कथा–साहित्य में चलाई, जिसमें उन्हें अन्यतम सफलता प्राप्त हुई। उन्होंने जिस भी विषय पर लेखनी चलाई उसके बारे पूर्णतया खुलेपन व औपचारिकतापूर्ण लिखा। मुख्यतः उन्होंने अपने लेखन में नारी चरित्र को महत्त्व दिया तथा नारी चित्रण को जिस खुलेपन से चित्रित किया, वह वास्तव में अपने आप में एक अद्वितीय साहस एवं उपलब्धि है। उन्होंने अपनी कृतियों में पंजाब प्रदेश की सभ्यता एवं संस्कृति का विशद् चित्रण किया है। राजेन्द्र यादव उनके विषय में कहते हैं, 'कृष्णा जी ने लिखा बहुत कम है ... लम्बी कहानी या लघु उपन्यास जैसी चार–पाच चीजें, चार–पाच कहानिया बीस–पच्चीस सालों की मात्र यही उपलब्धि। लेकिन मोती चुनना, पच्चीकारी या जरदोजी की महीन–नफीस कारीगरी शब्द को कोई भी ऐसा नाम दिया जा सके तो हिन्दी में वह सिर्फ कृष्णा जी ने किया है। एक–एक शब्द, वाक्य, कॉमा, फुलस्टाप जैसे हफ्तों के परिश्रम से आया है। वे भयानक परफेक्शनिस्ट हैं। अपनी कलम से कभी भी उस चीज़ को बाहर नहीं आने देंगी जिसकी सारी नोंक, पलकें उन्होंने दुरूस्त न कर ली हों।"[1]

हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज है। यहा नारी को स्वतन्त्रता से सोचने, बोलने व कुछ करने का संवैधानिक अधिकार तो है, पर सामाजिक अधिकार नहीं। समाज उसे लताड़ता है। नारी अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व बनाए रखने, समाज में पुरूष के समान दर्जा पाने के लिए प्रयासरत है। कृष्णा सोबती के कथा साहित्य की नारी समाज में संघर्ष करती दिखाई पड़ती है। समस्याओं से घिरी होने के उपरान्त वे इसे हल करने का प्रयास करती है, जिसमें सफलता भी मिलती है। लेखिका के नारी पात्र जुझारू, आत्म–सम्मानी, परिस्थितियों से जूझने वाली व सहजरूप में आगे बढ़ने वाले हैं।

उद्देश्य

साहित्यकार की सृजनात्मक शक्ति का मुख्य स्रोत मानव जीवन और उससे जुड़ी विविध क्रीड़ाएँ ही होती हैं। जीवन की प्रतिछाया ही साहित्य है। एक मानव के जीवन में जो घटित होता है वह सब साहित्य का विषय होता है। साहित्यिक गद्य विधाओं में उपन्यास एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित है। समकालीन उपन्यास साहित्य में महिला उपन्यासकारों की चर्चा विशेष रूप से की जाने लगी है। कृष्णा सोबती का नाम महिला कथा साहित्य में विषेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी के अनेक रूपों, पक्षों को समाज के सामने रखा है। यही कारण है कि जो उन्हें अन्य महिला कथाकारों से अलग रखता है। उनकी कृतियों में दबी, कुचली, शोषित पीड़ित विद्रोहिणी एवं स्वछन्द नारियों का चित्रण हुआ है जो परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ते हुए अपने

जीवन के नए रास्ते तय करते चलती हैं। इस आलेख में कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में नारी जीवन की विविध समस्याओं का आकलन किया गया है।

भारतीय समाज परम्परागत विचारों का पोषक समाज है। समाज आज भी परम्परागत विचारों का दामन थामे हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप समाज के आगे नारी को घुटने टेकने पड़ते हैं। कहीं–कहीं यदि वह सामाजिक परम्पराओं से टकराने का प्रयास करती है, तो स्वयं में टूट–टूट कर जीना होता है। आज नारी सचेत एवं जागरूक अवश्य है, परन्तु परम्परागत जंजीरों को तोड़ने के लिए और अधिक बोल्ड बनने की आवश्यकता है। उनका यह विरोध स्थितियों के अनुसार सीमाओं को लांघ भी पाया है और सीमाओं के भीतर भी है। नारी को बचपन में माता–पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन, बुढ़ापे में सन्तानों के अधीन रहना पड़ता है।

कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में नारी एवं परम्परा के कई रूप उद्घाटित हुए हैं। कृष्णा सोबती ने 'दिलोदानिश' उपन्यास में नारी एवं परम्परा का चित्रण बड़ी स्वाभाविकता से किया है। बऊआ जी अपनी बहू कुटुम्ब को नारी एवं उसकी परम्परा के बारे में समझाती हुई कहती है, "देख पुच्ची जो हमने देखा है, सहा है, कमोवेश वही तो तुम भी देखोगी और सहोगी। मरदों के हिस्से आए महफिल, मुज़रे, खेल–तमाशे और औरत को लगे हैं, बाल–बच्चे, दिन–त्यौहार, पूजा–व्रत। रोने–धोने से क्या बदलने वाला है। अब जैसा जो कुछ है चलाती चलो। सो, बहूजी, जो तुम्हारे साथ हो रहा है, वह भी कुछ नया नहीं।"[2] अतः यहाँ स्पष्ट है कि नारी पुरातन काल से ही परम्पराओं का पोषण करती आई है, वह अब भी इसकी पोषक है। नारी को ही सारी परम्पराएं निभानी हैं, मर्द स्वतन्त्र है, वह जो चाहे कर सकता है। जहाँ जाना चाहे जा सकता है। औरतों को रीति–रिवाज, परम्पराओं, धर्म, पूजा, व्रत, त्यौहार सभी को मानना पड़ता है। न चाहते हुए भी उसे परम्पराओं को निभाना पड़ता है।

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'जिन्दगीनामा' में भी नारी एवं परम्पराओं का चित्रण किया है। यहाँ पर उद्धरण प्रस्तुत है, "निक्की बेबे ने सतपुत्री वीरांवाली को आगे कर चल दिए, लस्सी डाल, परिक्रमा कर अग्निदेवता की। जुग–जुग आता रहे यह कर्मों वाला दिहाड़ा। झोलियाँ भरती रहें। दुल्हने देहरी चढ़ती रहे। सतपुत्रियाँ होती रहें।"[3] यहाँ पर नारी एवं परम्परा का चित्रण किया गया है। सारे रीति–रिवाजों का पालन नारी को ही करना पड़ता है। जब लड़की रात को घर देर से आती है, तो समाज में परिवार में बबाल उठता हे। उद्धरण प्रस्तुत है, "अराइयों की फतेह घर नहीं पहुँची। हाय रे, कफन पड़े ऐसी जवानी पर। सरगी बेला की घर से गई।"[4] लड़की देर रात तक घर नहीं आती तो अनेक प्रकार की बातें बनाई जाती हैं। ऐसा लगता है जैसे नारी इज्जत की ठेकेदार है।

'डार से बिछुड़ी' की पाषो भी परम्परा में जकड़ी नारी है। नानी एवं मामियाँ उसे बात–बात पर डाँटती रहती हैं। यहाँ पर उद्धरण प्रस्तुत है, "कभी नारी के संग ठाकुरद्वारे जाती तो नारी तेवर चढ़ा सिर ठोकती–रब्ब तुझे संभाले, अरी कपड़ा नीचे रखा कर। कुएँ से गागर भरकर लाती तो बड़ी मामी आँखे तरेरती, फिर क्रोध से बांह में अटकी गागर खींचकर कहती, पसार छूने लगी, नषर्म, न हया! अरी ओढ़नी अब तेरे गले तक से उठने लगी।"[5]

कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' की 'दादी–अम्मा' कहानी में दादी परम्परा घोषित नारी है। यहाँ उद्धरण प्रस्तुत है, "मेहराँ की गोद में इस परिवार की बेल बढ़ी है। आज घर में तीन बेटे हैं, उनकी बहुएँ हैं। ब्याह देने योग्य दो बेटियाँ हैं। हल्के–फल्के कपड़ों में लिपटी उनकी बहुएँ जब उसके सामने झुकती हैं तो क्षण–भर के लिए मेहरां के मस्तक पर घर की स्वामिनी होने का अभिमान उभर आता है। वह बैठे–बैठे उन्हें आशीष देती है और मुस्कुराती है। ऐसे ही, बिल्कुल ऐसे ही वह भी कभी सास के सामने झुकतीथी।"[6] अतः यहाँ नारी परम्परा का पोषण कर रही है, जैसे उसकी सास ने किया, वह भी उस परम्परा को निभा रही है। वह अपनी बहू से भी यही चाहती है।

कृष्णा सोबती ने दर्शाया है कि नारी को समाज में अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। विधवा के रूप में उसका जीवन नरकतुल्य बनता है। उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। 'दिलोदानिश' की छुन्ना विवाह होने के कारण अपने ही परिवार में पराई सी लगती है।'डार से बिछुड़ी' की पाशो विधवा होने के कारण अनेक पुरूषों के हाथ बिकती है। 'बदली बरस गई' की कल्याणी की माँ विधवा होने पर बेघर हो जाती है। वेश्यावृति भी नारी के लिए अभिशाप है, जिसमें नारी उपभोग की वस्तु बनकर रह जाती है। शरीर खत्म होने पर उसका कोई मूल्य नहीं रहता व प्रताड़ित होती है। 'मित्रो मरजानी' में मित्रो की माँ बाला जो अब बूढ़ी हो चुकी है। अब उसका कोई ग्राहक नहीं है, कोई मित्र–प्यारा, संगी–साथी नहीं है। 'गुलाबजल गँडेरियाँ' की धन्नो जवानी में कई पुरूषों को आनन्द प्रदान करती है, पर आज वह किसी काम की नहीं है। 'आजादी शम्मोजान की' की शम्मो के लिए आज़ादी का कोई महत्त्व नहीं है, वह तो अपने ग्राहकों की प्यास बुझाने को ही आज़ादी समझती है।

भारतीय समाज में सदियों से यह प्रथा चली आ रही है कि विधवा स्त्री को अपना सब कुछ त्याग कर मोह–माया छोड़ कर एक साध्वी की तरह जीवन व्यतीत करना होगा। उसके लिए समाज के हर तीज–त्योहार, घूमना–फिरना, अच्छा खाना–पीना वर्ज्य माना जाता है। बस सुबह–षाम पूजा–पाठ, मन्दिर–मस्जिद के फेरे।

कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में 'विधवा जीवन का चित्रण किया गया है। 'दिलोदानिश' उपन्यास की पात्रा छुन्ना एक विधवा है। उसके पीहर व ससुराल वाले चाहते हैं कि वह साध्वी सा जीवन व्यतीत करे। यहा छुन्ना के शब्दों में, "अपनों से उम्मीद यही की जाती है कि पूजा ध्यान में दिल लगाए। व्रत करें, तीर्थ करें। तीर्थों को जाए, अपने अन्दर–बाहर की तरंगों को शांत कर विधवा बन जाएं। पहनने ओढ़ने की मुमानियत।"[7] अतः यहा छुन्ना के माध्यम से विधवा नारी की समस्या को बखूबी चित्रित किया है। उसके बंध–उपबंधों एवं प्रतिबंधों का भी चित्रण किया गया है। छुन्ना की माता बऊआजी भी उसे यही सलाह देती हुई कहती है, "यह कतइयत न तुम्हारे हाथ में और न हमारे। कलाइया सूनी हो जाएं तो उम्र–भर को लानते–मलामत। ऐसे में कान–आख मुंद कर ही अंगुलियों के बल चलना होता है। बहुतेरी पड़ी हैं

ऐसी। हमारी मानो तो सत्संग पूजा में ध्यान लगाओ छुन्नी, उसी से वक्त कटेगा।"[8] 'डार से बिछुड़ी' की पाशो विधवा बनने पर अनेक कठिनाइयों का सामना करती है। दिबान लखपतराय के मर जाने के बाद दिबान का छोटा भाई उसे बेच डालता है, जिस कारण वह अभिषप्त जीवन जीने के मजबूर होती है। पाषो के करुणामय जीवन का वर्णन इस प्रकार लेखिका करती है, "कहाँ हूँ, मैं कहा हू? कड़ी आवाज आई – चुपचाप पड़ी रह! तेरी फरियाद सुनने वाला दूर–दूर तक कोई नहीं। अच्छा–अच्छा तो भला। शुक्र बरकत दिवान ने मेरा ऋण तो चुकाया। भागमरी, यह घर–बार संभाल और द्रोपदी बनकर सेवा कर मेरी और मेरे बेटों की।"[9] विडम्बना देखिए पाशो के विधवा होने पर उसे कर्जा चुकाने के लिए बेच दिया जाता है और वह अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर होती है। 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की विभिन्न कहानियों में भी विधवा समस्या का चित्रण हुआ है। 'बदली बरस गई' कहानी में कल्याणी की मा विधवा होने के बाद आश्रम का जीवन जीने के लिए मजबूर है। कल्याणी की चाची व दादी उसे यहा रहने के लिए मजबूर करती है। "घेरे में भी पिता की मृत्यु के बाद मा असंख्यवार रोती थी, दादी और चाची के कलह से निकल कर रात को मा का रोना नया नहीं था। मा जो आश्रम में आकर एक ओर बैठ गई है, वह क्या दादी–अम्मा की उन बातों को भुला देने के लिए?"[10] 'कुछ नहीं, कोई नहीं' कहानी में शिवा अपने प्रेमी आनन्द की मृत्यु हो जाने के प्श्चात् अकेली पड़ जाती है। उसका आज कुछ नहीं, कोई नहीं हैं। विधवा होने के कारण वह अभिशप्त जीवन जीने को मजूबर है। यहा शिवा स्वयं कहती है, "कहा रहूगी, कहा जाऊगी, कुछ पता नहीं। मैं किसी की कुछ नहीं, कोई नहीं।" 'अभी उसी दिन ही तो' की कहानी में सकुन्ती विधवा होने के कारण अपने बेटे–बहुओं, पोते–पोतियों से दूर अलग–थलग अकेली पड़ी है। उसे आज अपना घर भी पराया लगने लगा है। वह कहती है, "यह घर उसका है, उसका अपना है, तब से है जब इस आंगन में वह अधिकारपूर्वक गर्व से नन्हें–नन्हें बच्चों की देखभाल करते–करते खीज और ममता से मुस्कुरा दिया करती थी और उस मुस्कुराहट को प्यार से चूम लेने वाली पति की वह मीठी और अपनेपन में घुली दृष्टि और उस दृष्टि का अनुसरण करने वाली वह स्वयं आज कहाहै वे दिन – खुले–खुले हल्के और बंधी–बंधी उन्नींदी रातें, एक जमाना बीत गया लगता है।"[11] कितनी व्यथा है सकुंती के इन शब्दों में।

'सिक्का बदल गया' कहानी में शाहनी शाह के मरने के बाद अकेली हो जाती है उसे अपना घर छोड़ना पड़ता है। "साहनी के कदम डोल गए। चक्कर आया और दीवार के साथ लग गई। इसी दिन के लिए छोड़ गए थे शाहजी उसे? बेजान सी शाहनी की ओर देखकर बेगू सोच रहा है, क्या गुजर रही है शाहनी पर। मगर क्या हो सकता है। सिक्का बदल गया।"[12] अतः यहा पर शाहनी के अकेलेपन का चित्रण है। एक ओर वह विधवा जीवन जी रही है, वहीं दूसरी ओर राज बदल जाने से उसे बेघर भी होना पड़ा।

नारी जीवन से जुड़ी एक विकट समस्या है वेश्यावृति की जिसे लेखिका ने अपने कथा–साहित्य में बखूबी चित्रित किया है। 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में मित्रो की मा 'बालो' एक वेश्या है। जवानी के दिनों में अनेक पुरूष उसके जीवन में आए। अब बुढ़ापे में उसका कोई संगी–साथी नहीं। मित्रों व बालो की आपसी वार्ता से यह स्पष्ट हो रहा है, "बीबो, ऊपर पौढ़ता डिप्टी तेरा इतना ही मित्र–प्यारा है तो इस कुधुचिया को क्यों उससे मेल ठेल करने भेजा? बालो ने सिर हिला–हिला लड़की को कुछ कहना चाहा, फिर एकाएक कसकर मित्रो को बाँहों में भींच लिया और हिड़क–हिड़क कर कहा, तेरी माँ के जमाने लद गए, री मित्ती। अब कौन इसका मित्र–प्यारा और कौन इसका संगी–साथी। तेरी दिलगारों की गिनती तो सौ–सैंकड़ों में थी, बीबो।"[13]

'दिलोदानिश' में महक की माँ नसीमाबानो एक वेश्या है। वह नवाब का खून करती है। वकील कृपानारायण उसका मुकद्दमा लड़ते हैं और अपनी बेटी को उन्हें सौंपती है। महकबानो भी पत्नी का दर्जा पाने में कामयाब नहीं होती। माँ के कारण महक भी इसका शिकार बनती है। यहाँ महक कृपानारायण से कहती है, "बताइए न कि आप हम तक पहुँचे तो कैसे पहुँचे। क्या अम्मी का मुकद्दमा हमारे हाथ न होता तो हम आप तक कैसे पहुँचते। इतनी बड़ी दुनिया में आपको कहाँ ढूँढते।"[14] यहाँ पर महकबानो कृपानारायण से सम्बन्ध तो स्थापित करती है, पर पत्नी का दर्जा पाने में कामयाब नहीं होती। इसका कारण उसकी माँ का वेश्या होना है।

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में 'गुलाबजल गँडेरियाँ' कहानी में धन्नो एक वेश्या है। उसकी सबसे बड़ी त्रासदी है कि उसके बहुत सारे आशिक थे, परन्तु अब वृद्धावस्था कोई नहीं। तन की ठंडक, गले की ठंडक के लिए तो बस गुलाबजल गँडेरियाँ, ठंडी–ठंडी मलाई कुल्फी की चाहत है। यहाँ उद्धरण प्रस्तुत है, "और इस बदन कोठरी में लौट छटपटाहट से धन्नो का मन अपनी गन्दी काली–चमड़ी को उतार फेंकने को हुआ था, पर कपड़ों की तरह यह चमड़ी अपने हाथों नहीं बदली जा सकती, नहीं बदली जा सकती। बिहारी सेठ का लड़का दूर जा चुका था। धन्नो गर्मी से भुनती हुई चबूतरे पर से उठकर कोठरी में जा पड़ी। पतली ढीली चारपाई के सिवाय आज इस कोठरी में और है ही क्या।"[15] यहाँ पर वेश्या जीवन की विवशता व देह के ढीला होने के कारण अभावग्रस्त जीवन का चित्रण हुआ है।

'आज़ादी शम्मोजान की' कहानी में कृष्णा सोबती ने शम्मो बीबी का चित्रण किया है, जिसके लिए आज़ादी का कोई महत्त्व नहीं। लोग आज़ादी का जश्न मना रहे हैं। उसे लिए कोठे के बाहर की जिन्दगी का कोई मतलब नहीं। यहाँ उद्धरण प्रस्तुत है, "शम्मोजान कोठे पर आ खड़ी हुई। उसी समय भूरे ने अपने गलीज से स्वर में कहा, "बाई, चलो, आज अच्छी चीज लाया हूँ। लोग आजादी से गले मिल रहे थे और अन्दर शम्मोजान अपनी पुरानी आज़ादी बाँट रही थी जो उसके पास शायद अभी भी बहुत थी, बहुत थी।"[16] यहाँ पर दर्शाया गया है कि वश्या के लिए आज़ादी का कोई महत्व नहीं, उसका काम तो मात्र लोगों के देह की प्यास बुझाना है, इसी में उसकी आज़ादी है।

पुरूष प्रधान समाज होने के कारण सदियों से नारी शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार रही है। कभी वह समाज से उत्पीड़ित हुई है तो कभी समाज के वहशी

दरिन्दों ने उसका शोषण किया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में नारी की परिवर्तित स्थिति और दृष्टिकोण के बाद भी नारी शोषित हो रही है। समाज, अर्थ, धर्म, व्यक्ति सभी के द्वारा आज भी नारी शोषित है।

कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में नारी के शोषण एवं उत्पीड़न का मार्मिक चित्रण किया है। 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में पाशो के शोषण एवं उत्पीड़न की व्यथा है। वह अनेक पुरूषों के उत्पीड़न एवं शोषण का शिकार होती है। यहाँ तक कि उसके मामा–मामी भी इसमें पीछे नहीं। यहाँ उद्धरण प्रस्तुत है, "तन्दूर के पास पड़े लकड़ियों के ढेर से एक छड़ उठा कई हाथों फिर मारने लगे। तेरी ऐसी करतूतें। तड़पी, रोई–धोई, पर मामू तो थमे नहीं। मामू का पैर पकड़कर सिर पटकने लगी। और न मारो मामू, मैंने कुछ नहीं किया।"[17] अतः यहाँ पर पाशो का उत्पीड़न एवं शोषण इन पंक्तियों द्वारा चित्रित हुआ है। इसके उपरान्त विधवा होकर, उत्पीड़न एवं शोषण का शिकार बनती है और ऋण चुकाने हेतु देवर द्वारा उसे बेचा जाता है।

नारी जीवन गृहस्थ जीवन तक ही सीमित होता है। पति के संरक्षण में ही वह जीती है। यदि वह विधवा होती है या अविवाहित होती है, तो उसकी आर्थिक परिस्थितियाँ अत्यन्त दयनीय हो जाती है। कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी की दयनीय आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। जिसके कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' में पाशो की आर्थिक परिस्थितियां प्रतिकूल होने के कारण वह अनेक परिस्थितियों से गुजरती है। "होश में आई तो दिन चढ़ आया था। डोले का पल्ला उठा देखा, दूर सामने सँकरी चढ़ाई पर किसी पुरानी हवेली के झरोखे जैसे घूर–घूर इधर ही देखते थे। कौन सा नगर है, यह कौन कोट है, डोले वालों की हाँक पर घर के घर बाहर निकल आए। रूक्का पढ़ थलथली आवाज में बोले, अच्छा–अच्छा सो भला! शुकर है वरकत दिबान ने मेरा ऋण तो चुकाया। भागमरी, यह घर–बाहर सम्भाल और द्रोपदी बनकर सेवा कर मेरी और मेरे बेटों की।"[18] यहाँ पर पाशो की दयनीय स्थिति का चित्रण हुआ है। उसकी आर्थिक परिस्थितियाँ विपरीत होने के कारण उसका जीवन नर्क, तुल्य बन गया है। वह दर–दर की ठोकरें खाने को मजबूर है।

'दिलोदानिश' उपन्यास में महकबानो की स्थिति भी दयनीय है। महक आर्थिक परतन्त्रता के कारण चाहकर भी कोई हसरत अपने होठों पर नहीं ला सकती। इस कारण वह वकील कृपानारायण पर आश्रित है। यहाँ पर महक की माँ परिस्थितिवश उसे कृपानारायण के हवाले कर देती है। यहाँ उद्धरण प्रस्तुत है, "आते–आते वह कयामत का दिन आ पहुँचा और सब कुछ परिन्दा बनकर उड़ गया। रह गए हम, अम्मी के गुरू सूरजसेन की बेटी। अम्मी जेल में थीं। उनका मुकद्दमा लड़ने वाले थे वकील साहिब। क्या ख़बर थी कि उन्हीं की तराजू पर हम तुलने को थे।"[19] अतः महक की आर्थिक परिस्थितियां प्रतिकूल होने के कारण कृपानारायण की कृपा पात्र बनती है। मुकद्दमा लड़ने की कीमत उसे शरीर के माध्यम से चुकानी पड़ती है।

'कुछ नहीं, कोई नहीं' कहानी में शिवा पति के मर जाने के बाद आर्थिक रूप से कमजोर होकर परिस्थितिवश अभावग्रस्त एवं उपेक्षा का जीवन जीती है। आनन्द के मरने के बाद शिवा की आर्थिक स्थितियाँ बदल जाती हैं, आनन्द के बच्चे उसे हीनता की दृष्टि से देखते हैं। वे उसे घर छोड़ने व बेचने के लिए मजबूर करते हैं। "आनंद के बच्चों को आनंद का सब कुछ सौंपकर तीन–चार दिन यहाँ से चली जाऊँगी। फिर न कभी घर देखूँगी, न घर का सामान, न सामान से लिपटी अतीत की स्मृतियाँ। कहाँ रहूँगी, कहाँ जाऊँगी, कुछ पता नहीं। रूप अब किसे आज जानना है मैं कहाँ हूँ, मैं क्या हूँ? मैं किसी की कुछ नहीं, कोई नहीं।"[20] यहाँ पर शिवा की दयनीय एवं एकाकीपन स्थिति के साथ–साथ बदलती आर्थिक परिस्थितियों का भी चित्रण हुआ है।

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में भिन्न–भिन्न नारी पात्रों के माध्यम से अर्थाभाव में बद्तर जीवन का चित्रण किया है। अर्थाभाव के कारण 'मित्रो मरजानी' की बालो बद्तर जीवन जीने को मजबूर है। उसके पास अर्थ की कमी है, जिसके कारण वह अभावग्रस्त व बद्तर जीवन जी रही है। "माँ के कन्धे थाम उसकी काली–भरी आँखियों से बहते परनाते देख रूक–रूक कहा तेरे दिलगारों की गिनती तो सौ–सैकड़ों में थी, बीबो! न–न री, अब इस ठंडी भट्टी का कोई वाली–वारस नहीं। कोई मरे मनुक्ख का नाम भी नहीं।"[21] स्पष्ट है कि ऐसे समय उसकी बेटी भी उसका साथ देने को तैयार नहीं। 'डार से बिछुडी' की पाशो अर्थाभाव के कारण दर–दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। वह अनेक व्यक्तियों के शोषण का शिकार होती है। उसे लग रहा है जैसे वह व्यक्ति नहीं, कोई खरीद–फरोख्त की वस्तु है। 'गुलाबजल गँडेरियाँ' की धन्नो भी अर्थाभाव के कारण अभावग्रस्त एवं कष्टमय जीवन व्यतीत कर रही है। 'दिलोदानिश' उपन्यास में महकबानो आर्थिक पराधीनता के कारण ही शोषण का शिकार बनती है, उसकी माँ नसीमबानो के मरने के बाद उसे वकील साहिब का ही एक मात्र सहारा दिखता हैं। लेकिन वे उसे रखैल मात्र ही रखते हैं, पत्नी का दर्जा नहीं देते।

'डार से बिछुड़ी' में पाशो आर्थिक पराधीनता के कारण शोषण का शिकार होती है। आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण पाशो हर व्यक्ति के शोषण का शिकार होती है। "कड़ी आवाज सुनकर चौंक कर उठ बैठी। सामने देखा, दहलीज पर मंझले खड़े हैं। कपड़ा ठीक कर खाट बिछा दी। गागर में से पानी ले पाँव धोने आगे बढ़ी। बैठी–बैठी क्या करती थी? दुःखी हो बिना कुछ कहे सुने जाने को मुड़ी तो मंझले ने झपट कर कंधे से पकड़ लिया । झंझोर कर बोले ऐसा तेज! इन्हीं हाथों घमण्ड तेरा टूटेगा।" स्पष्ट है कि पाशो पाश्विकता का शिकार हो रही है। इसका मूल कारण आर्थिक पराधीनता है। पाशें इतनी सशक्त नहीं कि वह स्वाधीन रूप से धन कमा सके। आर्थिक पराधीनता के कारण पाशो घुट–घुट कर जीने को मजबूर है।

नारी अनादि काल से ही शारीरिक शोषण का शिकार होती आई है। आज के भौतिकवादी युग में नारी की अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, उसका शारीरिक शोषण होता आया है। नारी बचपन से जवानी व

जवानी से बुढ़ापे तक शारीरिक शोषण का शिकार होती रहती है। शारीरिक शोषण विभिन्न प्रकार से होता है। कभी अधिक कार्य करवाकर, कभी काम–वासना जनित शोषण, कभी अभावग्रस्त होने से शोषण होता हे। अतः विभिन्न रूपों में नारी का शारीरिक शोषण होता है। मुख्य रूप से अर्थ ही इसके लिए जिम्मेदार कारक है।

'आज़ादी शम्मोजान की' में शम्मोजान अर्थ के लिए कोठे पर शारीरिक रूप से शोषित होती है। उसके लिए आज़ादी का कोई महत्त्व नहीं रहता। वह तो आज़ाद देश में भी पराधीनता का जीवन जीने को मजबूर है। उसका शारीरिक शोषण तो होना ही है, चाहे स्वाधीनता हो या पराधीनता। अर्थ प्राप्ति के लिए वह वेश्या बन जाती है।यहाँ एक उद्धरण प्रस्तुत है, "और आज शम्मोबीबी जानती है कि आजादी का दिन है। जिन कोठों पर बैठकर वह राहगीरों को निमन्त्रण दिया करती है, उन्हीं पर आज तिरंगी झण्डिया लगाई जाएँगी। 'भूरे–भूरे' उसने आवाज़ लगाई। शम्मोजान की सीढ़ियों पर बैठा भूरा किसी नौजवान छोकरे को हाथ के इशारे से शम्मो के शरीर का नाप बतलाते हुए ऊपर आ पहुँचा और बोला, हाँ भाई आज झंडियां लगेंगी न।"[22] स्पष्ट है कि आज़ादी शम्मोजान के लिए कोई मायने नहीं रखती। उसका शारीरिक शोषण तो होना ही है चाहे स्वतन्त्रता का पर्व ही क्यों न हो।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन, उसकी समस्याएँ उसके संघर्ष का बखूबी चित्रण किया है। इनके कथा साहित्य में नारी जीवन की त्रासदी, संघर्ष और उत्पीड़न को विभिन्न पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। इनके कथा साहित्य में कहीं नारी विधवा जीवन जीने के लिए अभिशप्त है तो कहीं मजबूरीवश वेश्यावृति अपनाते हुए। नारी के आर्थिक संघर्ष को भी लेखिका ने विभिन्न कोणों से प्रस्तुत किया है। आर्थिक अभाव कहीं उसे नर्कतुल्य जीवन जीने पर विवष करता है तो कहीं कर्जा चुकाने हेतु उसे बेच दिया जाता है। इस प्रकार कृष्णा सोबती का कथा साहित्य नारी के अकेलेपन, अभावग्रस्त जीवन, रूढ़ियों एवं परम्पराओं से घिरी नारी के उत्पीड़न, संघर्ष एवं शोषण को अभिव्यक्त करता हुआ हमारे सामने आया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजेन्द्र यादव, औरों के बहाने, पृ. 37
2. कृष्णा सोबती, दिलोदानिश, पृ. 98
3. वही, जिन्दगीनामा, पृ. 41
4. वही, वही, पृ. 198
5. वही, वही, पृ. 202
6. वही, बादलों के घेरे, पृ. 33
7. वही, दिलोदानिश, पृ. 65
8. वही, वही, पृ. 143
9. वही, डार से बिछुड़ी, पृ. 80–81
10. वही, बादलों के घेरे, पृ. 68
11. वही, वही, पृ. 103–104
12. वही, वही, पृ. 138
13. वही, मित्रो मरजानी, पृ. 97
14. वही, दिलोदानिश, पृ. 17
15. वही, बादलों के घेरे, पृ. 76
16. वही, वही,पृ. 144
17. वही, डार से बिछुड़ी, पृ. 23
18. वही, वही, पृ. 81
19. वही, दिलोदानिश, पृ. 164
20. वही, बदली बरस गई, पृ. 91
21. वही, मित्रो मरजानी, पृ. 97
22. वही, आजादी शम्मोजान की,पृ. 132